◈ प्राक्कथन

साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है, अत: उसमें समाज की रीति-नीति, परंपरा एवं यंत्रणा-मंत्रणा तथा विडंबनाओं का यथार्थ प्रतिबिंबन होता है। प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक कालीन साहित्य पर यदि दृष्टिपात किया जाए तो उसमें दलित चेतना, दलित विमर्श के दर्शन होते रहे हैं। आधुनिक कालीन साहित्य में दलित विमर्श एक प्रमुख साहित्य-विधान के रुप में उभर रहा है। दलित साहित्य एवं दलित साहित्यकार के विषय में साहित्य जगत में फैली हुई अनेकानेक गलत भ्रांतियों ने दलित साहित्य को संदेह के दायरे में लाने का प्रयास किया है। अत: इस शोधकार्य के द्वारा उन विवादों और भ्रमणाओं को निरस्त्र कर दलित साहित्य के नवीन सौंदर्य मूलक तत्वों को सामने लाकर दलित साहित्य को सहित्योचित स्थान दिलाने का विनम्र प्रयास किया गया है।

जब मैं महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय का छात्र था तब हिंदी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार जगदीश चन्द्र का ' धरती धन न अपना ' उपन्यास पढ़ने का अवसर मिला था। इस उपन्यास द्वारा मुझे दलित जीवन की समूची विडम्बनाओं , विवशताओं एवं उनकी यातनाओं से रूबरू होने का अवसर मिला। इस उपन्यास के निमित्त मैं दलित साहित्य की परम्परा, दलित साहित्य की पृष्ठभूमि , दलितों पर थोपी गई निर्योग्यताएँ जैसे विषयों से रुबरु हुआ। दलित जीवन की संवेदनाएं मेरे दिल को छू गई। वैसे तो दलित जीवन की विभिन्न समस्याओं के बारेमें मैंने सुना था , एक दलित होने की वजह से मैंने भी कई बार इन समस्याओं को भोगा भी है। 'धरती धन न अपना' जैसे उपन्यास को पाठ्यक्रम के रुप में पढ़कर मुझे पहली बार इसका साक्षात्कार हुआ था। दलित जीवन से रूबरू होने के बाद इस क्षेत्र में कुछ और काम करने की मेरी ईच्छा बलवती हो रही थी और इसीलिए मैंने निश्चय कर लिया था कि भविष्य में यदि मुझे अवसर मिला तो दलित साहित्य को लेकर ही शोधकार्य करूँगा। इसी विचार के साथ मैं जब डॉ. एन. एस. परमार साहब से

मिला तो हम दोनों ने मिलकर इस विषय पर काफ़ी विचार विमर्श किया। हिंदी के कथा साहित्य को लेकर काफ़ी शोधकार्य हुआ है , अत: डॉ. परमार साहब ने मुझे समकालीन दलित कविता पर कार्य करने का परामर्श दिया। कविता में मेरी पहले से ही काफ़ी रूचि रही है। परमार साहब के सुझाव के अनुसार मैंने इस विषय पर विचार एवं मनन करना शुरू कर दिया। इस विषय से संबंधित पर्याप्त विचार-विमर्श के पश्चात् हमने पीएच.डी. शोधकार्य हेतु विषय निश्चित किया- " हिन्दी की दलित काव्य परम्परा और समकालीन दलित कविता : एक अनुशीलन"। पीएच.डी. का यह शोधकार्य मेरे निर्देशक डॉ. एन.एस. परमार साहब की शिष्य-वत्सलता एवं निरंतर मार्गदर्शन का प्रतिफलन है। उनके शुभाशिष लेकर मैंने यह शोधकार्य संपन्न किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है। इन सातों अध्यायों के द्वारा दलित कविता के उदगम से लेकर आधुनिक कविता के स्वरुप, उसकी सामाजिकता, उसकी भाषाभिव्यंजना एवं उसकी साहित्यिक उपादेयता को निरुपित करने का प्रयास किया गया है।

शोध-प्रबंध के अध्याय क्रमशः निम्नलिखित हैं -

प्रथम अध्याय विषय प्रवेश का है। शोध प्रबंध का विषय दलित साहित्य की परंपरा एवं समकालीन दलित कविता से संबद्ध है, अत: इस अध्याय में हमने एतद् विषयक कतिपय मुद्दों को सामने रखा है जिनसे दलित साहित्य सघन रूप से जुड़ा हुआ है। अध्याय के प्रारंभ में 'दलित' एवं 'दलित साहित्य' की अवधारणाओं का यथामति विवेचन किया गया है। विषय को आगे बढ़ाते हुए इस अध्याय में आगे दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र एवं आधुनिक दलित विमर्श की विभावना को स्पष्ट करने का उपक्रम रहा है। समय-समय पर दलितों के उद्धार एवं उत्थान के प्रयास भी समाज सुधारकों द्वारा होते रहें है , अत: इस अध्याय में डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर , महात्मा गांधीजी तथा ज्योतिराव फूले के प्रयासों का आकलन करने का यथामति

प्रयास किया गया है। अध्याय के अंत में समग्रावलोकन की प्रक्रिया के द्वारा अध्याय से कतिपय निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है एवं संदर्भानुक्रम को शास्त्रीय पद्धति के अनुसार प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय दलितों पर थोपी गई निर्योग्यताओं से सम्बन्धित है। संसार में सर्वत्र कार्यकारण नियम चलता है, संसार में यदि कुछ होता है तो उसके पीछे कोई न कोई कारण तो होता ही है। हमारे शोध विषय का संबंध दलित चेतना से जुड़ा हुआ है , हमारे यहाँ आज जो इतना प्रबुद्ध और प्रखर दलित साहित्य उभरकर सामने आया है, उसके मूल में दलित जीवन की वह दर्दनाक दास्तानें है, जिनका स्मरणमात्र ही दिल दहला देनेवाला है। दलितों का सदियों का संताप ही आज साहित्य के रूप में प्रकट हुआ है। आज का युग विज्ञान का युग है, यह युग आँखें मूंदकर किसी बात पर विश्वास नहीं करता, वरन् तर्क और वैज्ञानिकता की द्रष्टि से उसका मूल्यांकन करता है। अतः इस द्रष्टि से दलित साहित्य में आये इस प्रचंड प्रवाह के कारणों और तर्कों की परिचर्चा अनिवार्य बन जाती है। दलित साहित्य के पीछे हजारों वर्षों की वेदनाएँ है। हमारे यहाँ धर्म एवं शास्त्रों के नाम पर दलितों पर कई-कई प्रकार की निर्योग्यताएँ थोपी गई थीं। इन निर्योग्यताओं के कारण दलित मानव होते हुए भी जानवरों जैसा जीवन व्यतीत करने पर मजबूर था। प्रस्तुत अध्याय में हमने इन निर्योग्यताओं की विस्तृत एवं विशेष चर्चा की है क्योंकि दलित साहित्य के मूल में यही निर्योग्यताएँ रही हैं। दलित सहित्य में जो प्रखरता एवं विद्रोह का स्वर पाया जाता है उसका कारण भी यही निर्योग्यताएँ हैं। इस अध्याय में हमने दलितों पर थोपी गई धार्मिक निर्योग्यताएँ, अस्पृश्यता सामाजिक निर्योग्यताएँ, शैक्षिक निर्योग्यताएँ, आर्थिक निर्योग्यताएँ आदि का सप्रमाण रूप से आकलन करने का प्रयास किया है।

तृतीय अध्याय है दलित साहित्य की पृष्ठभूमि और परम्परा। प्रस्तुत अध्याय में हमनें दलित साहित्य की पृष्ठभूमि और परंपरा को निरुपित किया

है। यहाँ प्राचीन काल के वाल्मीकि और ' रामायण ' से लेकर सिद्ध एवं नाथ साहित्य की चर्चा करते हुए आधुनिक काल के अछूतानंद तथा माताप्रसाद तक के कवियों की एतद् विषयक रचनाओं को प्रस्तुत करनेका प्रयास किया गया है । आदिकाल की दो प्रवृत्तियाँ- सिद्ध साहित्य और नाथ साहित्य साधना के सन्दर्भ में मतभेद रखते हुए भी एक विषय में सहमत है। ये उभय काव्य प्रवृत्तियों के कवि वर्ण-व्यवस्था और जात-पांत तथा ऊँच-नीच के विरोधी हैं। फलतः उन्होंने इस व्यवस्था पर करारे प्रहार किये। सिद्ध और नाथ कवियों के उपरांत भक्तिकाल की संत काव्यधारा के कवि जो निर्गुण मार्गी थे वे आते हैं , जो नाथ पंथियों के द्वारा निर्मित विद्रोह की पृष्ठभूमि को और भी पुष्ट करते हैं। इन संत कवियों ने समाज की इस कुव्यवस्था को आड़े हाथों लिया है। ये कवि नात-जात एवं जाति-पांति के भेदभाव में विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने सब मनुष्य को एक समान माना है। इसीलिए उनके साहित्य के द्वारा दलित जातियों में एक नई चेतना का संचार होता है। इन संत कवियों में नामदेव, दादू, कबीर, नानक, रैदास, मलूकदास आदि कवि प्रमुख है । इन कवियों के कारण छोटी जातियों के लोगों की चेतना का विकास होता है। उन्हें यह ज्ञात होता है कि ये ऊँच-नीच की दीवारें किसी भगवान ने नहीं बनाई है परंतु यह उच्च जातियों द्वारा अनुशासित समाज व्यवस्था की देन है। प्रस्तुत अध्याय में हमने प्राचीनकाल के वाल्मीकि और व्यास की अमर रचनाएँ 'रामायण' और 'महाभारत' की विवेचना से प्रारंभ करके कबीरदास, रैदास, गुरु नानक, धर्मदास, दादू दयाल, नरसिंह महेता, संत पीपाजी आदि जैसे भक्ति काल के कवियों की रचनाओं तथा आधुनिक काल के अछूतानंद और माताप्रसाद तक के विविध कवियों की रचनाओं के आकलन के द्वारा दलित काव्य परंपरा को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

चतुर्थ अध्याय में हमने समकालीन दलित साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षरों एवं उनके कृतित्व को मूल्यांकित करने का प्रयत्न किया है। अध्याय के आरम्भ में 'समकालीन' से क्या तात्पर्य है उसे स्पष्ट किया गया है , क्योंकि भिन्न-भिन्न सन्दर्भों में 'समकालीन' शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थ निष्पन्न होते हैं । हिंदी आलोचना में 'साठोत्तरी' की भाँती ' समकालीन ' शब्द भी रूढ़ हो गया है । सन् १९८० या सन् १९८५ के बाद के हिन्दी साहित्य को ' समकालीन ' संज्ञा दी गयी है। किन्तु यह भी ध्यान देने योग्य है कि उन रचनाओं में समकालीन समयबोध, भावबोध एवं समकालीन चेतना की उपस्थिति का होना जरूरी है। समकालीन दलित कविता साहित्य पर प्रकाश डालते हुए हमने हमारे शोध प्रबंध के आधारभूत कवियों की रचनाओं का आकलन एवं विवेचन करने का प्रयास किया है । दलित कविता एक असीम समंदर है , जहाँ अनेक कवि अपनी रचनाओं के द्वारा दलित काव्य साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं , अत: अध्ययन की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए हमने दलित साहित्य के कुछ प्रमुख हस्ताक्षर ओमप्रकाश वाल्मीकि, जय प्रकाश कर्दम, डॉ. श्यौराजसिंह बेचैन, डॉ. मोहनदास नैमिशराय, डॉ. कुसुम वियोगी,डॉ. कँवल भारती, डॉ.पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी, मलखानसिंह, सुशीला टाकभौरे, डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर, डॉ. सुखवीर सिंह, मंशाराम विद्रोही, डॉ. धर्मवीर, डॉ. श्यामसिंह शशि, डॉ. एन. सिंह, डॉ. कर्मशील भारती, अशोक भारती, डॉ. सी.बी. भारती , डॉ.असंग घोष, दयानंद बटोही, रजनी तिलक का संक्षिप्त जीवन परिचय देते हुए उनके रचनाकर्म को प्रस्तुत किया है ।

पंचम अध्याय में हमने समकालीन दलित कविता में निरुपित विभिन्न समस्याओं का आकलन करने का प्रयास किया है । यह एक सर्वविदित एवं इतिहास प्रसिद्ध सत्य है कि भारत में धर्म और शास्त्रों तथा परम्पराओं के नाम पर समाज के एक बहुत बड़े वर्ग को सदियों तक कुचला गया है, रौंदा गया है । उनका सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और नैतिक शोषण हुआ है । ब्रिटिश शासनकाल में प्रकाशित

त्रावणकोर के गजट रिपोर्ट में किन-किन दलित जातियों से ऊँची जातियों के लोग कितने-कितने फूट की दूरी से अपवित्र हो जाते हैं, उसका उल्लेख किया गया है । बहरहाल जिन जातियों का जीवन ही भयंकर दरिद्रता और संताप में व्यतीत हुआ हो उनके जीवन में समस्याएँ न हो तो ही आश्चर्य होगा । यही समस्याएँ और विडम्बनाएँ दलित विद्रोह की चिनगारियाँ है, दलित साहित्य का जो प्रचंड ज्वालामुखी आज भभक रहा है उसकी जड़ें इसी समस्याओं में गड़ी हुई है । दलित समस्याएँ दलित साहित्य के प्रमुख विषय रहे हैं, अतः प्रस्तुत अध्याय में हमने आलोच्य कवियों की रचनाओं के आधार पर दलित जीवन की विविध समस्याओं का आकलन करने का प्रयास किया है। इस अध्याय में हमने दलितों की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, नैतिक, शैक्षिक आदि समस्याओं को सोदाहरण आकलित करने का प्रयास किया है ।

षष्ठ अध्याय है समकालीन दलित कविता शिल्प एवं नवीन भाषाभिव्यंजना । दलित साहित्य पर प्रायः आरोप लगाये जाते हैं कि उनका साहित्य केवल आक्रोश, विद्रोह और संताप का साहित्य है, सिर्फ रोना-धोना और सवर्णों को गालियाँ देना ही इस साहित्य का एक मात्र उद्देश्य है , उसमें अभिव्यक्ति की गहराई का अभाव होता है । काव्यशास्त्रीय और सौन्दर्यशास्त्रीय मानदंडों पर यह साहित्य इतना खरा नहीं उतरता है । उसमें अभिव्यक्तिगत अपरिपक्वता लक्षित होती है । परंतु इन बातों में कोई तथ्य नहीं है । दलित कवियों की रचनाओं में भी अलंकार, विशेषण-विपर्यय, नये विशेषण, नये रूपक, नवीन मुहावरे, नये ताजा प्रतीकों और बिंबों का प्रयोग हमें विपुल परिमाण में मिलता है। इस प्रकार दलित साहित्य के द्वारा एक नया विश्व, एक नया गवाक्ष हमारे सामने खुलता है । दलित साहित्य एक नई विचारधारा को नये रूप में हमारे सामने रखता है । फलतः परंपरित कविता की अभिव्यंजना से एक नये प्रकार की अभिव्यंजना हमें यहाँ उपलब्ध होती है । प्रस्तुत अध्याय में हमने आलोच्य कवियों की रचनाओं के साक्ष्य पर दलित कविता के काव्य सौंदर्य को

निरुपित करने का प्रयास किया है। समकालीन दलित कविता के काव्य-सौंदर्य मूलक अध्ययन में हमने दलित कविता के शिल्प विधान की विस्तृत चर्चा की है। दलित कविता के सौंदर्यात्मक अध्ययन को तीन आधारों पर वर्गीकृत किया गया है,

१. दलित कविता की भाषा

२. दलित कविता के भाषिक तत्व

३. दलित कविता की सामाजिक प्रतिबद्धता

दलित कविता के सौन्दर्यमूलक तत्वों को उजागर करके हमने दलित काव्य सौंदर्य संबंधी भ्रमणाओं को तोड़ने का विनम्र प्रयास किया है। यहाँ हमने आलोच्य कवियों की कविता के साक्ष्य पर उपर्युक्त मुद्दों की तलाश की है।

सप्तम अध्याय उपसंहार का है जिसमें हमने संपूर्ण शोध प्रबंध के निचोड़ , तारतम्य और निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है। यहाँ प्रत्येक अध्याय में अनुसंधान एवं विवेचन के किए गए प्रयासों को क्रमानुसार प्रस्तुत किया गया है। शोध प्रबंध की उपादेयता को लक्षित करते हुए उसकी भविष्यत संभावनाओं को भी यहाँ उकेरा गया है। अध्याय के अंत में उपजीव्य ग्रन्थ, सहायक ग्रन्थ, कोश ग्रन्थ तथा पत्र-पत्रिकाओं की सूची , विभिन्न परिशिष्टों में प्रस्तुत करने का हमारा उपक्रम रहा है।

प्रथमत: मैं उस परम कृपालु परमात्मा के सामने श्रद्धानत हूँ , जिनकी करुणा एवं कृपालुता के कारण यह शोधकार्य संपन्न हुआ है। डॉ. एन.एस. परमार साहब के प्रति मैं विशिष्ट रूप से नत मस्तक हूँ जिन्होंने शिष्यवत्सलता से मुझे शोध कार्य के हर कदम पर सहायता एवं मार्गदर्शन दिया है। यहाँ मैं उन तमाम विद्वानों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनके ग्रंथों या लेखों से मुझे सहायता प्राप्त हुई है। मेरे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्षा डॉ. दक्षा मिस्त्री तथा विभाग के अन्य प्राध्यापक डॉ. ओ.पी. यादव, डॉ. शैलजा भारद्वाज, डॉ. के.वी. निनामा, डॉ. शन्नो पाण्डेय, डॉ.कल्पना गवली, डॉ. दीपेन्द्रसिंह जाडेजा, डॉ. मनीषा ठक्कर, डॉ. एम.पी. पाण्डेय आदि से भी मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायता एवं

मार्गदर्शन समय-समय पर मिलता रहा है । उनके प्रति भी अपनी विनम्रता प्रकट करता हूँ । हिन्दी विभाग के पूर्वाध्यक्ष प्रोफ़ेसर पारुकान्त देसाई साहब का मार्गदर्शन भी मुझे समय-समय पर मिलता रहा है । अतः इस अवसर पर मैं उनके प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ, मेरी दलित साहित्य से सम्बन्धित सोच की पृष्ठभूमि तैयार करने में उनका योगदान भी कम नहीं है। मेरे घर परिवार के लोग तथा मेरी माताजी एवं मेरी जीवनसंगिनी तथा मेरे बच्चों के प्रति भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने मुझे घर-परिवार की जिम्मेदारियों से मुक्त रखकर असीम स्नेह देकर इस शोध-कार्य के लिए समय एवं साथ दिया है ।

एक विशेष उद्देश्य को लेकर मैंने इस शोध प्रबंध की संकल्पना की है । दलित साहित्य आज के साहित्य जगत में एक महत्वपूर्ण स्थान बना चूका है, इसलिए उसकी विवेचना और अनुशीलन हेतु अध्येताओं , विद्वानों और जिज्ञासुओं का ध्यान इस साहित्य की ओर आकृष्ट करना मेरा मकसद रहा है । यह साहित्य जितना ही प्रखर और प्रबुध्ध बनता जा रहा है , उतनी ही गलत भ्रांतियां और भ्रमणाएँ उसके बारेमें फैलती जा रही हैं , अत: दलित साहित्य की ' साहित्यिकता ' को सप्रमाण सिद्ध करते हुए उसके बारेमें फैली इन भ्रांतियों को निरस्त्र करना मेरा उद्देश्य रहा है । दलित काव्य साहित्य के बारेमें अक्सर उसके काव्यशास्त्रीय सौंदर्य को लेकर तरह-तरह के विवाद एवं मतभेद हमारे सामने आते रहते हैं , इसलिए दलित कविता के अनुशीलन के द्वारा मैंने दलित कविता के सौंदर्यशास्त्र एवं उससे जुड़े समाजशास्त्र को यथामति व्यवस्थित ढंग से समझने और समझाने की चेष्टा की है । अपने इस शोध कार्य के द्वारा दलित साहित्य में छिपी साहित्यिकता को उजागर करके उसे साहित्योचित स्थान प्राप्त करवाना मेरा उद्देश्य रहा है । इस प्रकार दलित साहित्य की प्रतिष्ठा के द्वारा दलित जातियों में अस्मिता भाव को जगाना और उनको साहित्यिक हीनता के भाव से मुक्त करवाना मेरा विनम्र उद्देश्य है ।

यहाँ मैं विनम्रतापूर्वक कहना चाहता हूँ कि कोई भी मनुष्य सम्पूर्ण नहीं होता है, अत: त्रुटियों की संभावना को नकारा नहीं जा सकता । मेरे शोधकार्य में भी कुछ त्रुटियाँ रह गई होंगी, अत: विद्वानों और सुधी जनों से पहले ही क्षमा-याचना कर लेता हूँ । इससे भविष्यत् अनुसंधित्सुओं को किंचित भी लाभ हुआ तो मैं अपने श्रम को सार्थक समझूँगा ।

अंतत: यह शोध प्रबंध "हिन्दी की दलित परंपरा और समकालीन दलित कविता : एक अनुशीलन " आप विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत है , जिसमें मैंने विषय को न्याय देने का संपूर्ण निष्ठा से प्रयत्न किया है ।

स्थल : बड़ौदा

दिनांक : विनीत

(जीतेन्द्र मकवाणा)